

राजस्थान में सांस्कृतिक पर्यटन और वस्त्राकर्षण

स्वर्णलता सिंह¹

¹सह आचार्य-गृह विज्ञान, संत सुन्दरदास राजकीय, महिला महाविद्यालय, दौसा (राज.)

भारतीय संस्कृति, का रहन-सहन, पहनावा, परम्पराएँ एवं ऐतिहासिक स्थल हमेशा से विदेशी पर्यटकों को लुभाते रहे हैं। ऐसे में पर्याप्त संख्या में देशी-विदेशी पर्यटकों की आगमन से पर्यटन भारत का एक बड़ा सेवा उद्योग बनकर उभरा है। इसका योगदान देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 6.23 प्रतिशत है एवं कुल रोजगार में 8.78 प्रतिशत। गौरतलब है कि भारत में हर वर्ष 50 लाख से अधिक विदेशी पर्यटक आते हैं तथा 50 लाख से अधिक घरेलू पर्यटक भी पर्यटन करते हैं। तमिलनाडु को देखने के लिए प्रतिवर्ष 30 लाख से अधिक विदेशी पर्यटक भारत आते हैं। दक्षिण भारतीय राज्य तमिलनाडु भारत में सर्वाधिक विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने वाला राज्य है। गोवा, मुम्बई, राजस्थान, केरल, हिमाचल एवं जम्मू-कश्मीर आदि भी पर्यटन की दृष्टि से भारत के अग्रणी राज्यों में शुमार हैं। भारत में यदि पर्यटन उद्योग को बढ़ावा मिला है, तो इसका श्रेय पर्यटन मन्त्रालय को जाता है।

उल्लेखनीय है कि पर्यटन मन्त्रालय, पर्यटन के विकास और संवर्द्धन हेतु राष्ट्रीय नीतियों और कार्यक्रमों के प्रतिपादन के लिए नोडल एजेंसी का कार्य करता है। पर्यटन मन्त्रालय, भारतीय पर्यटन और यात्रा प्रबन्ध संस्थान, राष्ट्रीय जलक्रीड़ा संस्थान, राष्ट्रीय होटल प्रबन्धन एवं कैटरिंग टेक्नोलॉजी परिषद् जैसे स्वायत्त एकमात्र सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है। इसकी स्थापना 1 अक्टूबर 1966 को हुई थी। इसने देश में पर्यटन की आधारीक संरचना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। देश में सबसे बड़ी होटल श्रृंखला विकसित करने के अलावा भारत में पर्यटन विकास निगम ने पर्यटन से सम्बंधित अन्य सुविधाएँ जैसे परिवहन, शुल्क मुक्त खरीददारी, मनोरंजन, पर्यटक प्रचार साहित्य की प्रस्तुति, परामर्शी सेवाएं आदि उपलब्ध करवाई है। भारत के पर्यटन विकास निगम ने पिछड़े क्षेत्रों में, पर्यटन आधारीक संरचना के विकास में भी प्रतिबद्ध और महत्वपूर्ण सामाजिक भूमिका निभाई है। इस कार्य में उसका 'अतुल्य भारत' अभियान प्रशंसा का पात्र है।

गौरतलब है कि पर्यटन मन्त्रालय ने भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सन् 2002 में 'अतुल्य भारत' अभियान की शुरुआत की। इसके अन्तर्गत भारत की पर्यटन सम्बंधी विशिष्टता का विज्ञापन 'अतुल्य भारत' के नाम से प्रिन्ट है जिसका विज्ञापन इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से किया जा रहा है।

राजस्थान की संस्कृति, यहाँ का रहन-सहन पहनावा, परम्पराएँ एवं ऐतिहासिक स्थल हमेशा से विदेशी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहे हैं। यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर बड़ी सम्पन्न है। राज्य के प्राचीन किले, महल, धार्मिक स्थल, हवेलियों व अन्य भवन इमारतों के साथ लोक नृत्य, संगीत, दस्तकारियाँ और यहाँ के विशेष रंगीले परिधान पर्यटकों के आकर्षक केन्द्र हैं।

पर्यटन का विकास करने से संस्कृतियों का आदान-प्रदान करने के अवसर बढ़ते हैं। भारत में राजस्थान राज्य भी पर्यटन के क्षेत्र में अग्रणी है। राजस्थान के कई बड़े शहरों में होटल श्रृंखला विकसित करने के अलावा, राजस्थान में पर्यटन विकास निगम ने पर्यटन संबंधित अन्य सुविधाएँ जैसे- परिवहन, शुल्क मुक्त खरीददारी, मनोरंजन, पर्यटक प्रचार साहित्य की प्रस्तुति जैसे सेवाएँ आदि उपलब्ध करवाई है। राजस्थान के पर्यटन विकास निगम ने पिछड़े क्षेत्रों में पर्यटन आधारिक संरचना के विकास में महती भूमिका निभाई है।

राजस्थान के वस्त्र उद्योग भी अपने विकास में निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं। जिसमें जोधपुर शहर का बंधेज विश्वस्तरीय है, जयपुर का सांगानेरी व बगरू प्रिंट आज विदेशियों व देशियों की पहली पसंद है। बाड़मेर एवं जैसलमेर का पेच वर्क व कढ़ाई विश्व प्रसिद्ध है। कोटा शहर की डोरिया की साड़ियाँ वस्त्र उद्योग में अपना विशेष स्थान बना चुकी है और ये साड़ियाँ आज 'कोटा-डोरिया' के नाम से प्रसिद्धि पा चुकी हैं।

सांस्कृतिक व कलात्मक धरोहर का संरक्षण व सदुपयोग

पर्यटन का विकास करने से सांस्कृतिक आदान-प्रदान करने के अवसर बढ़ते हैं और लोगों का मानसिक क्षितिज विस्तृत होता है। राज्य में शेखावाटी इलाके की हवेलियों में दीवारों पर बनी चित्रकारी ने पर्यटकों को आकर्षित किया है। झुंझुनू जिले के महानगर (महणसर) ग्राम की हवेली के भीतरी भाग की सोना-चांदी की हवेली की मनोरम चित्रकारी प्रसिद्ध है। नवलगढ़ में कई करोड़पतियों की हवेलियाँ पर्यटकों के लिए देखने लायक हैं। इनमें मोरो

की हवेली तथा पोदारों, सेकसरिया, भगत, मानसिंधका, छावछरिया आदि की हवेलियों में मनमोहक चित्र अंकित हैं। इन चित्रों में झांकता जीवन अत्यंत रोचक प्रतीत होता है। हालांकि ये हवेलियाँ आज सूनी पड़ी हैं, क्योंकि इनके ज्यादातर सेठ लोग बड़े शहरों में बस गये हैं, लेकिन यहाँ से उनका सम्पर्क अभी भी बना हुआ है। इसी प्रकार अन्य कस्बों जैसे मण्डावा आदि की हवेलियों में बने चित्र व उनके बाहरी दृश्य पर्यटकों को लुभावने लगते हैं। उनका पर्यटन विकास माला में उपयोग किया जा सकता है। विभिन्न नगरों में महल, किले व अन्य इमारतें, झीलें आदि पर्यटकों को अपनी तरफ खींचते हैं। यहाँ के मेलों, त्यौहारों आदि पर जो उत्सव, नृत्य व संगीत के कार्यक्रम होते हैं, उनको देखकर विदेशी पर्यटक हर्षित होते हैं और लोक कलाकारों को विशेषतः कटपुतली के खेल आदि में अपनी प्रतिभा व दक्षता दिखाने का तथा उन्हें विकसित करने का सुअवसर मिलता है। जैसलमेर का मरू-मेला वास्तव में इस प्रकार आज भी राजस्थान सांस्कृतिक पर्यटन में योगदान बनाये हुए है। राजस्थान का कालबेलिया नृत्य देश-विदेश में अपनी पहचान बना चुका है।

सांस्कृतिक पर्यटन (Cultural Tourism)

सौभाग्य से राजस्थान में पर्यटन के विकास की काफी सम्भावनाएँ हैं जिनका भरपूर उपयोग किया जाना चाहिए ताकि यह उद्योग राज्य की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में अपना योगदान दे सके। जैसे कि पहले संकेत दिया गया है, राजस्थान में आज भी 'सांस्कृतिक पर्यटन' के विस्तार का काफी क्षेत्र है। यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर बड़ी सम्पन्न है और राज्य के प्राचीन किले, (अलवर का नीलकंठ भर्तृहरि बाला किला) महल, धार्मिक स्थल, जैसलमेर में पटवों की हवेलियाँ व अन्य भवन तथा इमारतें और साथ में लोक नृत्य व संगीत तथा दस्तकारियाँ पर्यटन के विकास को सुदृढ़ आधार प्रदान करते हैं। राज्य के पुरातत्व विभाग द्वारा इन ऐतिहासिक स्मारकों की सुन्दरता बढ़ाने के प्रयास किये जाने चाहिए। अजमेर में ख्वाजा मोहनुद्दीन चिश्ती की दरगाह का धार्मिक स्थल पर्यटन की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। यहाँ प्रति वर्ष दूर-दूर से काफी संख्या में जायरीन आते हैं।

राज्य के लोक कलाकारों को प्रोत्साहन देकर एक तरफ उनका परम्परागत कलाओं व प्रतिभाओं को प्रश्रय व संरक्षण दिया जा सकता है तथा दूसरी तरफ पर्यटन को भी

विकसित किया जा सकता है। इस कार्य को सुचारू रूप से आगे बढ़ाने के लिए निजी व सार्वजनिक कला केन्द्रों का विकास किया जाना चाहिए।

हस्तशिल्प की वस्तुओं की बिक्री की व्यवस्था व पर्यटन विकास

राजस्थान की दस्तकारियों के विकास व पर्यटन विकास का परस्पर गहरा सम्बंध पाया जाता है। राज्य में कई प्रकार की कलात्मक व उच्च कोटि की हस्तशिल्प की वस्तुएँ बनती हैं जिन्हें विदेशी बहुत चाव से खरीदते हैं। इनमें रत्नआभूषण, मीनाकारी, किशनगढ़ की थेवा कला जिसमें शीशे पर सोने का काम किया जाता है, वस्त्र, मूर्तियाँ आदि का विशेष महत्व है। राजस्थान की राजधानी जयपुर की ब्लू पॉटरी विदेशी पर्यटकों का खासा आकर्षण का केन्द्र है। इनमें माल की गुणवत्ता, कीमत व डिजायनों की विविधता आवश्यक होती है। इनके उत्पादन व विपणन के प्रमाणीकरण पर पूरा ध्यान देने की आवश्यकता है। इस सम्बंध में दो बातों पर विशेष ध्यान देना होगा। प्रथम कारीगर को अपने माल की उचित कीमत मिले, द्वितीय पर्यटक के साथ किसी भी प्रकार की धोखाधड़ी न हो। इसके लिए बिक्री केन्द्रों की व्यवस्था में अत्यधिक सुधार करने की आवश्यकता है।

पर्यटन विकास के लिए कानून व्यवस्था में किसी भी प्रकार की कमी नहीं होनी चाहिए। इसके अलावा छोटी-छोटी अनेक बातों पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए, जैसे पर्यटकों को भिखारी तंग न करें, उन्हें कहीं भी घेर लेने का प्रयास न करें तथा उनके साथ किसी भी प्रकार का अशिष्ट व्यवहार न हो। यह भी प्रस्ताव है कि अलग से 'पर्यटन पुलिस' बनायी जाये जिसे पर्यटकों की शिकायतों का निराकरण करने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। पर्यटन विभाग को सम्बंधित सेवाओं को लाइसेंस देने और निरीक्षण का अधिकार दिया जाना चाहिए। हमें राज्य में आने वाले देशी व विदेशी पर्यटकों की प्रतिक्रियाओं एवं सुझावों पर पूरा ध्यान देना चाहिए और सभी प्रकार की सुविधाओं व साधनों को बेहतर बनाना चाहिए ताकि भविष्य में पर्यटकों की संख्या में और वृद्धि हो सके।

राजस्थान जितना पर्यटन में उन्नत है उतना ही वस्त्रों के विकास में उन्नत है। राजस्थान में आने वाला पर्यटक यहाँ के वस्त्रों से अपना ध्यान नहीं हटा सकते इतने खूबसूरत और रंगीन वस्त्र होते हैं कि पर्यटक ऐतिहासिक धरोहर देखने के बाद दूसरा काम यहाँ से वस्त्र

खरीदना पसंद करते हैं। राजस्थान का प्रत्येक शहर, छोटे से छोटा गाँव अपने अन्दर कला को समेटे हुए है जिसे वो लोक हस्त शिल्प के माध्यम से वस्त्र परिधानों पर उकेरते रहते हैं। भारत जैसे विशाल देश का राजस्थान ऐसा राज्य है जिसके निवासी किसी भी वस्तु को बेकार जाने नहीं देते इतने मितव्ययी होते हैं कि हर संकट को आसानी से मुस्कुराते झेल लेते हैं। यही कारण है कि यहाँ कि महिलाएँ कभी भी खाली और बेकार नहीं बैठती है। राजस्थान की जलवायु और बदलते मौसम के अनुसार यहाँ की कलाएँ बदलती रहती है।

राजस्थान के किसी हिस्से में अतिवृष्टि है तो कहीं सूखा है। कहीं धूल भरी आंधियाँ है तो कहीं 10-20 कोस दूर से पानी लाती महिलाएँ है, कहीं बारिश के इन्तजार में खेत और किसान दोनों है, तो कहीं लहलाती फसलें भी है। मौसम के इतने विरोधाभासी व्यवहार के साथ भी राजस्थानवासी जीवटता के साथ अपना जीवन यापन करते हैं और अपनी पहचान बना कर रखते हैं भारत के मानचित्र पर ही नहीं अपितु विश्व पटल पर भी। राजस्थान का हर शहर, हर जिला अपनी ऐतिहासिक धरोहरों के कारण जाना जाता है वहीं पर इन धरोहरों के साथ उस शहर के वस्त्र-परिधान भी अपनी पहचान रखते हैं जिसके कारण पर्यटक इनकी ओर आकर्षित होते हैं।

बीकानेर

बीकानेर राजस्थान का वो शहर है जहाँ पर सांस्कृतिक धरोहर बेहद खूबसूरत है साथ ही वस्त्रों की परम्पराओं में भी पीछे नहीं है। यहाँ की जेलों (कारागार) में कैद कैदियों के हाथों से बने कालीन और दरियाँ विश्वप्रसिद्ध हैं। कालीन इतने सुघड़ और गहनता से बने होते हैं कि फर्श पर बिछाने के बाद दूर से देखने पर पानी जैसा दिखाई देता है कालीन नहीं।

जयपुर : राजस्थान की राजधानी जो पर्यटन के साथ-साथ वस्त्र उद्योग को भी अपने में समेटे हुए है। यहाँ पर सांगानेर, बगरू जैसी जगहों पर वानस्पतिक रंगों से छपाई कर वस्त्र तैयार किये जाते हैं सम्पूर्ण विश्व में अपनी एक अलग पहचान रखते हैं 'सांगानेरी ब्लॉक प्रिंटिंग' व 'बगरू की ब्लॉक प्रिंटिंग' वस्त्र उद्योग में अपना एक अलग ही स्थान रखती हैं, जयपुर आने वाले सैलानियों के लिए यहाँ से वस्त्र परिधान खरीदना पहली प्राथमिकता होती है। जयपुरी रजाईयाँ, दोहर, बेडशीट, साड़ियाँ, लेहंगे, सूट और बिना सिला ड्रेस मेटिरियल यहाँ की खास पहचान है।

जोधपुर

राजस्थान की 'सूर्यनगरी' के नाम से विख्यात शहर है जहाँ पर बंधेज और बांधनी के वस्त्र अपनी बारीकी और विन्यास के लिए प्रसिद्धि प्राप्त है जो सैलानी जोधपुर आते हैं उसकी खरीददारी में बंधेज व बांधनी के वस्त्र प्राथमिकता में होते हैं। इसके अलावा जोधपुर के 'साफे' (सर पर पहनने वाली पगड़ी) जोधपुरी साफे के नाम से विख्यात है। यहाँ के राजघराने के पुरुष एक नये ही अंदाज में साफा पहनते थे। हालांकि जयपुर और बीकानेर के साफे भी प्रसिद्ध हैं परन्तु जोधपुरी साफे की छटा ही निराली है। रेशमी, सूती, ऊनी और लिनन सभी तरह के वस्त्रों पर बांधनी बांधी जाती है। प्राकृतिक और रासायनिक रंगों का इस्तेमाल होता है। जयपुर व बीकानेर में भी बंधेज बांधा जाता है पर सबकी अपनी-अपनी विशेषता और रंग व डिजाइन होते हैं।

चित्तौड़गढ़

राजस्थान के चित्तौड़गढ़ को "जोहर की भूमि" कहा जाता है। भव्य किला अपनी भव्यता और देशभक्ति की कहानियाँ सुनाता है। तो भक्त शिरोमणी मीरा बाई की भक्ति की गंध आज भी उस किले में गूँजती है। सैकड़ों रानियों को अपने अन्दर समेटे चित्तौड़ की भूमि हमेशा गौरवान्वित होती है कि सैकड़ों रानियों ने अपनी आन-बान और शान को बचाने के लिए धधकती आग में खुद को सौंप दिया और मुस्लिम शासक जीत कर भी हार गया। ऐसी ऐतिहासिक भूमि पर वस्त्र का इतिहास भी कुछ कम नहीं है। यहाँ आने वाले पर्यटक 'दाबू प्रिंट' 'अकोला प्रिंट' के वस्त्र व परिधान अवश्य पसंद करते हैं या कहें पहली पसंद मानते हैं। चित्तौड़गढ़ जिले के बेड़च नदी के किनारे स्थित 'छीपों का आकोला' में पांच सौ साल (500) पुरानी 'दाबू छपाई' आज भी जीवित है। इस कला में आज आधुनिक युग में भी मशीनों के बजाय हाथों से सारा काम किया जाता है। यह एक मड रेसिस्ट प्रिंटिंग का एक रूप है जिसकी शुरुआत लगभग 675 ईस्वी में हुई थी। इस छपाई में इस्तेमाल होने वाले रंग प्राकृतिक संसाधनों और खनिजों से मिलते हैं। है लोगों के बीच इस छपाई का क्रेज आज भी।

दाबू छपाई, सांगानेरी और बगरू जैसी दूसरी पारम्परिक राजस्थानी हस्तशिल्पों की तरह ही की जाती है। दाबू छपाई से बने, चादर, साडियाँ, ड्रेस मटीरियल, दोहर अनेकां आपका मन लुभाते हैं।

जैसलमेर और बाड़मेर

दोनों ही शहर राजस्थान के जलवायु के हिसाब से गर्मियों में गर्म बेहद गर्म और सर्दियों में पारा शून्य से भी नीचे माइनस में चला जाता है। जैसलमेर की ऐतिहासिक धरोहरों को देखें तो वहाँ का किला अपने आप में एक विशेष पहचान लिए हुए है। यहाँ के पटवों की हवेलियाँ जिन पर अविस्मरणीय नक्काशी की गई, सोने जैसी रेत के ऊँचे-ऊँचे टीले जहाँ पर सैलानी सर्दियों में सबसे ज्यादा आते हैं। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ यहाँ का वस्त्र भी अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने में पीछे नहीं हटता है। यहाँ पर पट्टू बुनाई वाला वस्त्र सबसे ज्यादा तौर पर पहना जाता है। उन से कम चौड़ाई की लम्बी-लम्बी पट्टियाँ बुनी जाती हैं जिनको आपस में जोड़ कर चौड़ी शॉल बनाई जाती है। जिसे “पट्टू” कहा जाता है। इस क्षेत्र के सभी समुदाय के लोगों द्वारा इसे पहना जाता है। उसे बड़ा ही खूबसूरत बुनाइयों के माध्यम से बना जाता है। पट्टू बुनाई से पीढ़ा (बैठने की छोटी चौकी), लकड़ी की तनी खाट, फर्श बिछावन, ऊँट की बेल्ट, बिस्तर के कवर, कुशन कवर, टेबल रनर, दुपट्टा, स्टॉल, कुर्ता आदि। अंगरखा, सलवार और ढीली पैंट जैसे अनेको परिधान बनाये जाते हैं। इसके अलावा, शीशे का काम भी बड़ा खूबसूरत किया जाता है। इसके अलावा यहाँ पर चमड़ा शिल्प ‘अद्वितीय’ है। पारम्परिक जूते व जूतियाँ, जिन पर जटिल कढ़ाई की जाती है तैयार किये जाते हैं इसके अलावा बैग, पर्स, फोन केस, चश्मा केस निश्चित रूप से यहाँ की गलियों से गुजरते ध्यान आकर्षित करते हैं। चमकीले रंगों से सजे बंधेज व बाटिक के कपड़ों और परिधानों को देखे बिना नहीं रहा जायेगा।

बाड़मेर भी कम नहीं है। ऐतिहासिक धरोहरों के साथ बाड़मेर शुरू से ही और व्यापार मार्ग बना रहा है, उसी कारण शिल्प क्षेत्र बहुत समृद्ध है यहाँ पर लकड़ी की नक्काशी का खूबसूरत फर्नीचर, मिट्टी के सुन्दर-सुन्दर पात्र व बर्तन, कपड़ों पर काँच की कढ़ाई, एप्लिक वर्क के परिधान व घर सजावटी वस्तुएँ ‘अजरख प्रिन्ट’ का निर्माण कार्य बहुतायत से किया जाता है और यह कला सम्पूर्ण भारत में प्रसिद्ध है। वर्तमान समय में उत्सवों और शादी समारोह की भव्यता में रंग बिरंगी छतरियों को शामिल किया जाता है। प्रत्येक

उत्सव की सजावट का अंग है ये छातें, जिन्हे बाइमेर की महिलाओं द्वारा तैयार किया जाता है। चटक, गहरे रंग के छातों पर पारम्परिक डिजाईनां के नमूने बनाये जाते हैं ये बारिश में उपयोगी नहीं होते पर धूप व सजावट में प्रथम स्थान पर हैं। ये इतने चटकीले रंगों के होते हैं कि ध्यान स्वतः ही इस ओर चला जाता है। “अजरख” छपाई गहरे लाल और गहरे नीले रंग के वस्त्रों का प्रमुख रंग है। अजरख छपाई ब्लॉकों से की जाती है। जितना ज्यादा वस्त्र धुलता है इसके रंग और निखर कर आते हैं। इस छपाई से सुन्दर घाघरे, चोली, चुन्नी, साड़ी, सूट, बेडशीट आदि अनेक सामान बनाये जाते हैं जो सैलानियों की पहली पसंद है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि राजस्थान राज्य कोई भी जिला और शहर ऐतिहासिक धरोहर के साथ वस्त्रों का उत्पादन स्थल है जिसे राजस्थान से बाहर से आने वाले सैलानियों द्वारा पसंद किया जाता है और अपनी खरीदारी में प्राथमिकता देते हैं।

समकालीन परिवर्तन

जैसे-जैसे भारत विश्व के मानचित्र पर विकाशशील देश के रूप में उभर रहा है उसकी पर्यटन शैली और क्षेत्र भी चरम पर है। राजस्थान की सांस्कृतिक विविधता लिए हुए है। इसे “रंगीला राजस्थान” इसलिए ही कहते हैं। क्योंकि हर उत्सव तीज त्यौहार शादी, जन्म-मरण हर तरह के अवसरों के लिए निर्धारित रंग और जेवर है। हम इनके पहनावों को ही नहीं अपितु घर और ऐतिहासिक स्मारकों को देख कर बता सकते हैं कि हम राजस्थान के किस क्षेत्र में हैं। राजस्थान की संस्कृति को जानने की जिज्ञासा हर विदेशी पर्यटक को होती है। यहाँ के ग्रामीण परिवेश को जानना-समझना हर पर्यटक चाहता है।

वर्तमान समय में बहुत सारे परिवर्तन और बदलाव राजस्थान के पर्यटन में देखने को मिलते हैं। जब विदेशी और स्वदेशी पर्यटकों की दिलचस्पी राजस्थान में ज्यादा दिखी तो पुरानी जितनी भी ऐतिहासिक इमारतें थी उन्हें होटल में तब्दील कर दिया। इतना ही नहीं होटल की आन्तरिक सज्जा यहाँ कि संस्कृति, राजघरानों के वैभव की द्योतक बन गयी। हर आने वाले पर्यटन के मन में एक कौतुहल रहता है कि राजस्थान के लोग किस प्रकार से अपनी संस्कृति को जीते हैं। राजस्थान की संस्कृति को अगर करीब से देखना है तो किसी गांव की सैर करिये, किसी गाँव के सामाजिक उत्सव व समारोह में जाइये।

आजकल महानगरीय लोग थीम शादी या गंतव्य विवाह कराने उदयपुर, जोधपुर, जैसलमेर, जयपुर जाना पसंद करते हैं क्योंकि यहाँ की संस्कृति सांस लेती है, जीवित है जहाँ पर शादी के पग-पग पर कोई ना कोई रस्मों रिवाज निभायी जाती है। जहाँ बड़े-बड़े दुर्ग, हवेलियाँ, किले व गढ़ों को पारम्परिकता के साथ होटल में बदल दिये गये हैं जिससे पर्यटक वहाँ की जीवन्त संस्कृति का अनुभव महसूस कर सके।

संस्कृति एक विस्तृत और विविध संकल्पना है, जो किसी समाज, समुदाय या देश के जीवन के तरीके, विश्वासों, आस्थाओं, परम्पराओं, मान्यताओं, रीति-रिवाजों, विचारधाराओं, कला, साहित्य, संगीत, भोजन, परिधान और पहनावा और जीवनशैली को दर्शाता है। किसी भी समाज की पहचान और अस्तित्व निर्धारण संस्कृति के माध्यम से ही किया जाता है यह पीढ़ी दर पीढ़ी एक स्थान या समाज में हस्तांतरित होती है।

एडवर्ड टायलर ने कहा है कि “संस्कृति कुल ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता, कर्तव्य और अन्य क्षमताएँ हैं, जो समाज के एक सदस्य के रूप में मनुष्य ने अर्जित की होती है।” (ब्रूनिस्लॉव मलिनोवस्की),

इसी प्रकार ब्रूनिस्लॉव मलिनोवस्की ने कहा है कि “संस्कृति एक समाज के साधनों, उपयोगिताओं और उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं को संयोजित करती है, जो जीवन को एक सुसंगत और गतिशील रूप प्रदान करते हैं।”

उपरोक्त परिभाषाएं हमें देश, समाज, समुदाय शहर की संस्कृति से परिचित करवाती हैं जब हम किसी शहर, नगर, राज्य या देश के भ्रमण के लिए जाते हैं तो यही संस्कृति, ‘सांस्कृतिक’ शब्द में बदल जाती है। तभी हम यह कह पाते हैं कि राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर सम्पन्न है।

यह कहा जा सकता है कि सांस्कृतिक शब्द की उत्पत्ति प्रकृति से हुई है। यह शब्द जीवनशैली, कलात्मक अभिव्यक्ति, प्रभाव, सांस्कृतिक धरोहर और सामाजिक परंपराओं को दर्शाता करता है जो एक विशेष समुदाय, समाज, शहर या कस्बे में विकसित होते हैं। सांस्कृतिक आदान-प्रदान और विकास समाज की पहचान और विशेषताओं को निर्धारित करता है। संस्कृति को जानने और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए पर्यटन की आवश्यकता है। व्यक्ति को आनी नियमित जीवनशैली से बाहर किसी अन्य स्थान, शहर,

देश की यात्रा करनी होती है ताकि वे नए स्थानों, संस्कृतियों, स्थानीय परंपराओं और सांस्कृतिक स्वरूपों के बारे में जान सकें। पर्यटन सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह विभिन्न स्थानों के बीच आदान प्रदान, व्यापार और सांस्कृतिक संपर्क को बढ़ावा देता है

सांस्कृतिक पर्यटन इस प्रकार का पर्यटन है जिसमें लोग किसी स्थान की सांस्कृतिक धरोहर, परम्पराएँ, इतिहास, कला, संगीत वास्तुकला, नृत्य, त्यौहार, खान-पान, पोशाक-पहनावा और अन्य सांस्कृतिक पहलुओं को अनुभव करने के लिये यात्रा करते हैं।

तभी यू. एन. डब्ल्यू. टी. ओ. (UNWTO) ने कहा है कि “सांस्कृतिक पर्यटन वह यात्रा है जिसमें लोग किसी स्थान की सांस्कृतिक धरोहर, परम्पराओं, कला, संगीत, ऐतिहासिक स्थलों और सामाजिक पहलुओं को अनुभव करने के उद्देश्य से यात्रा करते हैं।” किसी प्रदेश का सांस्कृतिक पर्यटन उस देश के लिए अति महत्वपूर्ण होता है जो संस्कृति समय की धूल के नीचे दब जाती है उसे सांस्कृतिक पर्यटन द्वारा हटाया जा सकता है और सैलानियों के सम्मुख प्रस्तुत किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आदिम संस्कृति - प्रकाशन जे.मरे 1871 मिशिगन विश्वविद्यालय
2. The Dynamics of culture change Malinowski Bronislaw Yale University Press Asmania University 1945.
3. Cultural Tourism: The Partnership between Tourism and cultural Heritage Management Bob Mckercher. Hilary des Cros, #Vyst , 2014
4. The Anthropology Tourism: Heritage, Mobility and society. Edward M. Bruner
5. Cultural Tourism: Global and Local Perspectives - Melanie Smith, Laszlo Puczko.
6. Tourism, culture and sustainable Develop, David A. Fennell
7. Cultural Tourism in a changing world: Politics, Participation and Resimagination-Greg Richards.
8. Rajasthan : A cultural Journey - Amiya P. Sen
9. The Kingdom of Rajasthan – Pradeep shrma.
10. Rajasthan: An illustrated Guide-christ K.E. Goug.
11. United nations world tourism organizations (UNWTO).